# यादों की बारात में हिंदी..

**डॉ पी. एस. बी आर जेम्स**
गुरु कृपा, सं 128 प्रथम मंजिल
कल्याण नगर पी ओ, वॉलूर-43.
20.12.2000

**प्रश्नः** *सर, आपने सी एम एफ आर आइ में वर्ष 1988 में हिंदी अनुभाग की स्थापना की यह राष्ट्र हित का एक सच्चा कार्य है. इसकी अन्तःप्रेरणा क्या आप बता सकते हैं ?*

**उत्तरः** सुनिए , राजभाषा का प्रचार एक संवैधानिक आवश्यकता है. इस केलिए देश में नीति निर्माण भी हुए हैं. पर सरकारी तौर पर इसका अमल में लाने को बहुत समय लग गये, यदि मेरा विचार ठीक है तो वर्ष 1978 में सरकार ने राजभाषा विभाग की स्थापना की और इसके बाद ही कार्यालयों में कार्यान्वयन पर दिशा निर्देश दिये जाने लगे थे. जैसा कि आप जानते हैं कोई भी कार्यक्रम को आगे बढाने केलिए कार्मिकों की ज़रूरत है इसे मानते हुए 1988 में संस्थान के मुख्यालय में विशेष रुचि लेकर मैं ने एक केंद्रक हिंदी अनुभाग की स्थापना की और हिंदी कार्यक्रमों को आयोजित और कार्यान्वित करने को एक हिंदी अधिकारी और 2 हिंदी अनुवादकों की नियुक्ति की गई.

**प्रश्नः** *यह सच है कि हिंदी संघ सरकार की राजभाषा है, सराकार का कामकाज हिंदी में किए जाना ज़रूरी भी है. लेकिन सी एम एफ आर आइ जैसे वैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान में क्या हिंदी उतना आसान है ? आपकी मानती क्या है ?*

**उत्तरः** भले ही आप जानते हैं, आसान नहीं. इस केलिए सरकार ने हिंदी व अंग्रेज़ी साथ-साथ चलाने की नीति अपनाई है, इस से यह लक्षित है कि धीरे धीरे हम अंग्रेज़ी को निकाल पायेंगे. प्रश्न मैं आपको वापस करता हूँ. आप हिंदी अफ़सर है, सी एम एफ आर आइ में बहुत वर्ष लगे हुए भी, बोलिए हिंदी की प्रगति के बारे में अब आपका विचार क्या है ?

*प्रगति बहुत धीमी है सर, फिर भी हम कोशिश करते रहते हैं.*

भला आप कोशिश करते ही रहना. वैसे आपने दूसरा प्रश्न उठाया था न ? वैज्ञानिक संस्थान में हिंदी - मेरे ख्याल से साहित्यक हिंदी और विज्ञान से जुडी हुई हिंदी में अंतर है. उदाहरण के तौर पर मैं उन्हीं दिन एन आइ ओ, गोवा में हुई वैज्ञानिक संगोष्ठी को रखना चाहता हुँ. उस में हिंदी में प्रस्तुत प्रपत्र कितने लोग पढे हुए होंगे ? मेरे ख्याल से बहुत कम हिंदी भाषी लोग, इसलिए ही सरकार ने देश को भागों में विभाजित करके हिंदी केलिए योजनायें खींची है. फिर

भी मैं यह नहीं मानता हूँ कि वैज्ञानिक विषयों में हिंदी हो ही नहीं सकती. हो सकता है, विस्तार कार्य केलिए ; शिक्षा-प्रशिक्षण में शुरू कीजिए, प्रभाव अच्छा होगा. लेकिन जैसा कि मैं ने पहले कहा बडे बडे कार्यान्वयन कार्यों पर ध्यान केंद्रीत न करें.

**प्रश्नः** *हाँ सर, आप ने वैसा ही किया था. सी एम एफ आर आइ के दैनिक कार्यों में हिंदी को जोडने की शुरूआत आप ने ही की थी. ऐसे कुछ कार्यक्रम आप याद करते होंगे ?*

**उत्तरः** क्यों नही ? वह समय सी एम एफ आर आइ में हिंदी का शुरूआत काल था. यह भी नहीं संस्थान के अधिकांश केंद्र दक्षिण भारत में हैं. इसलिए मैं ने सरल मामलों जैसे दौरा कार्यक्रम हिंदी में जारी करना, स्टेशनरी वस्तुओं व मान्य दस्तावेजों का द्विभाषीकरण करना, हिंदी में हस्ताक्षर करना, मानक प्रपत्रों की तैयारी से पत्राचार बढाना,डाक-सूची हिंदी में तैयार करना, रोज़ एक शब्द सिखाना, कार्यशालाएं व उनमें भाषण आयोजित करना, छोटी - मोटी पत्रिकाये प्रकाशित करना आदि पर बल दिए थे.

**प्रश्नः** *मुझे बेहद खुशी है सर, आपका याद पक्का है, जो बातें मैं भूल गई अब आप बता रहे हैं. आपके समय में हम ने हिंदी में इतना काम किया कि अब मुझे अद्‌भुत हो रहा है. यह सब काम आपके निष्ठापूर्ण कार्यनीति से संभव हो पाया है. इस नीति का स्वरूप क्या आप बता सकते हैं?*

**उत्तरः** जैसा कि मैं ने पहले उदाहरण सहित बोला , हिंदी के कार्यान्वयन केलिए मुझे बहुत ही व्यावहारिक नीति अपनाना पडा था. दूसरी बात यह है कि मैं इन कार्यक्रमों की प्रगति की निगरानी भी किया करता था. सौभाग्यवश हिंदी केलिए एक समिति थी, राजभाषा कार्यान्वियन समिति, मुख्यालय में मेरी अध्यक्षता में और अनुसंधान केंद्रों में उन्ही केंद्रों के प्रमुखों की अध्यक्षता में कार्यरत थी. मुख्यालय की नियमित समिति बैठकों में मुख्यालय के साथ साथ केंद्रों के कार्यान्वयन की निगरानी होती थी, कमियों को सुधारने केलिए तुरन्त कारवाइयाँ भी होती थी.

**प्रश्नः** *बिलकुल ठीक है सर, इसके सिवा मैं गर्व के साथ जोडना चाहती हुँ कि आपके ही समय में हमने कर्मचारियों का सेवाकालीन प्रशिक्षण पूरा किया था. इस केलिए आपने कैसी योजनाएं खींची ?*

**उत्तरः** जो आप पूछ रही है, हिंदी शिक्षण योजना की बात है न ? मुझे याद है, उस समय अनिवार्य प्रशिक्षण दिये जाने के कर्मचारी बहुत थे. है न ? कर्मचारियों को एक साथ सेवा समय में प्रशिक्षण केलिए भेज देना मुश्कल था क्यों कि कार्यालय का काम भी चलाना था. इसलिए समयबद्ध योजना खींचते हुए प्रबोध, प्रवीण , प्राज्ञा में और हिंदी टंकण व आशुलिपिक कोर्सों में कर्मचारियों को भेज दिया था. वैसे केंद्रों के कर्मचारियों को भी इस प्रकार प्रशिक्षित किए जाने का आदेश भी जारी किया करता था. इन प्रयत्नों का सुपरिणाम यह हुआ कि पाँचवें वर्ष में मुख्यालय और 5 केंद्रों को नियम 10(4) के अंदर अधिसूचित कर पाया.

**प्रश्नः** *आप क्या मानोगे सर, इन प्रशिक्षणों से संस्थान में हिंदी का प्रयोग बढ गया है क्या ?*

**उत्तरः** एक हद तक विशेषकर प्रशासनिक कर्मचारियों में क्यों कि उन लोगों के काम से मिलते जुलते

पाठ्यक्रम में शिक्षण योजना, शिक्षा दिया करता था.

**प्रश्नः** *सर, आपके शासन काल में हिंदी में ही नहीं सारे कार्यों में नियमों का पक्का अनुपालन होता था. मार्ग जितना भी कठिन हो, प्रतिक्रियाएं जितना ही जटिल हो, आप सबका अनदेखा करते हुए नियमों को लागू किया करते थे. वैसे राजभाषा नियमों के अनुसरण करते हुए आपने संस्थान के स्नातकोत्तर कोर्स समुद्रकृषि की चयन परीक्षा में सामान्य ज्ञान का उत्तर हिंदी में लिखने का विकल्प दिया था. इसका परिणाम क्या आपको याद है ?*
*आप ही बोलिए हिंदी में कोई नहीं लिखे थे न ?*

**प्रश्नः** *हाँ, सर, हमारा काम व्यर्थ हुआ था. फिर भी मैं खुश हुँ कि आपने इस राष्ट्रीय कार्य केलिए बहुत कोशिश की. कभी कभी मैं हैरान करती थी कि इतनी बडी जिम्मेदारी के बीच भी हिंदी जैसे विषयों पर भी आप चिंता करते थे, विश्लेषण करते थे, योजनाएं खींचते थे. इस में तनिक भी सन्देह नहीं कि इस से संस्थान और देश ने बहुत पाए हैं. पर आप ने हिंदी से क्या पाया? आपका वैयक्तिक विचार क्या है ?*

मैं ने 1960 में ही हिंदी की परीक्षाएं अवार्डों के साथ उत्तीण किए थे. हिंदी भाषी प्रदेशों में मैं ने काम भी किए हैं. इसलिए सी एम एफ आर आइ में हिंदी के कार्यान्वयन करने का दयित्व लेना पडा तब मैं ने सारे तत्वों का निरीक्षण व विश्लेषण करते हुए कार्यान्वयन का एक प्रायोगिक मार्ग अपनाया. हिंदी मामलों में मेरे व्यक्तिगत भागीदारी से मैं मानता हुँ संस्थान में हिंदी की बडी प्रगति हुई है. संस्थान को 1994-95 को राजभाषा विभाग का क्षेत्रीय अवार्ड मिला. इसी प्रकार संसदीय राजभाषा समितियाँ जब मुख्यालय केचीन व मिनिकॉय केंद्र का मुआइना किया था, संस्थान के काम पर संतुष्टि व सराहना प्रकट की.

**प्रश्नः** *संस्थान के अनुभव बता रहे हैं और कार्यकलाप अंकित कर रहे हैं कि आपका काल संस्थान केलिए बहुत ही प्रेरणाप्रद थे, सन्देह नही, हिंदी भी इसका लाभ भोगी है. यह आपके कुशल कार्यनितिओं और उत्कृष्ट विचारों से हो पाए हैं. हमारे मार्गदर्शन केलिए और कुछ सुझाव ?*

**उत्तरः** हिंदी में एक कहावत है आप भला तो जग भला ! हिंदी राष्ट्रीय एकता का सशक्त साधन है देश की बहुभाषिकता के परिप्रेक्ष्य में प्रोत्साहन व प्रेरणा से यह साध्य बनाया जा सकता है. इसकेलिए मेरे ख्याल से बोलचाल की हिंदी की बढावा पर जोर देना उचित होगा. जब लोग अनजाने ही हिंदी बोलना शुरू करें तो लोगों में हिंदी के प्रति आत्मीयता बढ जाएगी.
मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी है कि सी एम एफ आर आइ से हिंदी स्वर्ण जयंती वर्ष में एक प्रकाशन निकल रहा है सबको मेरी तरफ़ से हार्दिक शुभकामनाएं अदा करना.